**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 09-10-2020; Accepted: 24-10-2020; Published: 11-11-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 21-22**

# मिथिला में साधना का स्वरूप

**डॉ० शंकर शरण प्रसाद**
+2 बासुदेव मिश्र उच्च विद्यालय, सिमरी, बिहार, भारत

**सारांश**
शृंगार की परिणति भक्ति के रूप में होती है। ईश्वरोन्मुख रति के द्वारा भक्ति रस की अभिव्यक्ति होती हैं। श्रीकृष्ण की बाल्य तथा कैशोर लीलाओं का वर्णन ही ब्रजभाषा के कवियों ने किया है। संयोग तथा वियोग इन उभय स्थितियों से पूर्ण कृष्ण के लीलामृत का आस्वादन अतीव आह्दाकारी प्रतीत होता है।
मिथिला में काली उपासना की परम्परा परिलक्षित होती है। मिथिला माहात्मय के अनुसार मिथिला शब्द के तीन वर्ण म, थ तथा ल क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र के वाचक है।

**मूल शब्दः** साधना का स्वरूप, शृंगार, ईश्वरोन्मुख

## प्रस्तावना
मिथिला को भावतीर्थ कहा जाता है। तीर्थ की तीन कोटियाँ कथित है– कर्मतीर्थ, ज्ञानतीर्थ तथा भावतीर्थ। कुरुक्षेत्र कर्मतीर्थ है, वहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन के प्रति कर्मोपदेश किया था। मनुष्य एक मननशील प्राणी है। वह कर्मों का कर्त्ता तथा तज्जन्य फलों का भोक्ता है। श्रुति में कुर्वन्नेवेह कर्माणि की घोषणा की गई है। काशी को ज्ञानतीर्थ कहा गया है। उक्ति है–

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं
कुरूक्षेत्रे विनश्यति।
कुरूक्षेत्रे कृतं पापं
वाराणस्यां विनश्यति।
वारणास्याम कृतं पापं
वज्रलेपो भविष्यति।।

परंतु भावतीर्थ मिथिला में काशी के दुरितों का भी विनाश होता है। यहाँ आन्तर तथा बाह्य शत्रुओं का मंथन किया जाता है। इसीलिए मिथिला की महती मर्यादा सर्वत्र परिकथित है। तांत्रिक साधना के क्रम में मिथिला को कालीपीठ कहा जाता है।
मिथिला भूमि में ज्ञान तथा भक्ति का समन्वय दृष्टिगत होता है। यजुर्वेद, शतपथब्राह्मण, बृह्दारण्यकोपनिषद् आदि में मिथिला की साधना वर्णित है। यजुर्वेद के सम्पूर्ण मंत्र सूर्य के द्वारा मैथिल याज्ञवल्क्य को प्राप्त हुए थे। बृहदारण्यकोपनिषद् में ऐसी गाथा है कि जनक के बहुदक्षिणा यज्ञावसर पर विद्यमान भारतवर्ष के संपूर्ण विद्वानों को याज्ञवल्क्य ने अपनी मेधा से चमत्कृत कर दिया था। ब्रह्मवादिनी गार्गी ने याज्ञवल्क्य से विविध जटिल प्रश्न किए तथा महर्षि ने हस्तामलकवत इन सारे प्रश्नों का उत्तर दे दिया। शतपथ ब्राह्मण में साधना के विविध आयाम परिकथित हैं।
मिथिला जनकों की भूमि है, जिनके विषय में श्रीमद्भागवत में कहा गया है–

येते वै मैथिला राजन्
आत्मविद्या विशारदा।
योगेश्वरेण प्रसादेन
द्वन्द्वैर्मुक्तागृहेष्वपि।

याज्ञवल्क्य ने आत्मा को ही द्रष्टव्य सिद्ध कहा है– आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः। अततेर्वा तथा आप्तेर्वा के रूप में निरूक्तकार ने आत्मा शब्द को सिद्ध किया है। अग्नि इसकी मूर्द्धा है, सूर्य तथा चन्द्र उसके नयन है, दिशाएँ श्रोत्र हैं, वेद ही उसके वचन हैं, वायु प्राण तथा पृथ्वी पद है। यही सर्वभूतान्तरात्मा हैं–

अग्निर्मूर्धा
चक्षुषी चन्द्रयूर्यौ
दिशः श्रोत्रे
वाग् विवृताश्च वेदाः
वायु प्राणः
हृदयं विश्वमस्य
पद्भ्यां पृथिवी
ह्येष सर्वभूतान्रात्मा

शरीर का मिथ्यात्व स्वतः सिद्ध है। दरोघड्गोति दरभंड्गा के रूप में दरभंगा शब्द को सिद्ध किया गया है। यहाँ अभिनिवेश अर्थात् मृत्यु भय का विनाश होता है। गीता में क्षर, अक्षर तथा पुरुषोत्तम का वर्णन किया गया है। प्रकृति में क्षरणशीलता है। निगुर्ण निराकार ब्रह्म अक्षर तत्त्त हैं तथा क्षर एवं अक्षर का अधिष्ठाता पुरुषोत्तम है। यही क्षराक्षरोत्तम तथा रस ब्रह्म है। श्रुति में 'रसो वैसः' की घोषणा की गई है।
अवतारी ब्रह्म को भगवान कहा जाता है। ऋग्वेद के अुनसार विष्णु नामक गोप ने अपने तीन पदों से इस पृथ्वी का अतिक्रमण किया। विष्णु के तीन पद सत्, चित् तथा आनन्द हैं। सच्चिदानन्द भगवान् की लीला सतत प्रकट है।
मिथिला के ब्रजी कवियों ने रसब्रह्म कृष्ण की नाम माधुरी, रूपमाधुरी, धाममाधुरी तथा लीलामाधुरी का गायन कर भाव जगत् में अनुपम सुषमा को प्रतिष्ठित किया। कृष्ण की भगवत्ता सिद्ध की गई।
'भगः आस्यते इति भगवानः' के रूप में भगवान् शब्द को सिद्ध किया जाता है। 'भग्' शब्द के षष्ठ अर्थ ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य तथा मोक्ष कहे गये हैं। इन सबके प्रदाता तथा अधिष्ठाता को भगवान् कहा जाता है।
ब्रह्म, परमात्मा तथा भगवान के लीलानन्द को आयत्त करने की आवश्यकता है। ब्रह्म का अवतरण परमात्मा के रूप में होता है। भगवान् तो भक्ताधृत है। नारदीयभक्तिसूत्र में भक्ति को अमृतरूपा तथा प्रेमरूपा कहा गया है। निखिल वृत्तियों का समर्पण ही शक्ति है। यह अनिर्वचनीय तथा मूकास्वादनवत् है। आचार्य शंकर ने स्व स्वरूपानुसंधान को भक्ति कहा है–

'स्वस्वरूपानुसंधानं भक्तिरित्यभिधीयते'

जीव का स्वरूप ब्रह्म के साथ संबंध–स्थापना के ,ारा प्रकट होता हे। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा मधुर–भाव के द्वारा ही संबंध स्थापना संभ है।
मिथिला में साधना का यह स्वरूप प्रकट है। आकर्षण के देवता कृष्ण रसब्रह्म पुरुषोतम हैं। राधा इनकी आह्लादिनी शक्ति हैं। ब्रह्म की तीन शक्तियाँ संवित्, संधिनी तथा आह्लादिनी कथित हैं। यह ब्रह्म की स्वरूप शक्ति है। योगमाया का आश्रय लेकर कृष्ण ने ब्रजमंडल में रासलीला का विस्तार किया–

योगमायामुपाश्रितः।

पुरुषोत्तम ब्रह्म की उभय प्रवृत्तियाँ–रक्षण तथा रंजन की कही गई हैं। इन्हीं के आधार पर ब्रह्म को मर्यादा पुरुषोत्तम तथा लीला पुरुषोत्तम कहा जाता है।
चिज्जगत् में भगवान ही एक मात्र भोक्ता हैं। शेष सभी प्रकृति रूपेण भगवान् की भोग्या हैं। अखिल जीवों की काया प्रकृति–विनिर्मित होने के कारण यह आवश्यक है कि मूला प्रकृति की सन्निधि के द्वारा भगवान् की कृपासुधा प्राप्त हो।
कृष्णभक्ति साहित्य में राधात्व का प्राधान्य है। राधा कृष्ण की परमाधिका हैं। इनमें स्वसुख कामनालेश शून्यता है। एकमात्र प्रिय सुख की ही आकांक्षा है। इनके जीवनोदधि में प्रीति की विविध वीचियों का प्राद्रर्भाव होता है। विरह की तरंगें भी प्रकट होती हैं। राधाव्रन के बिना कृष्णार्चन का कोई अधिकार प्राप्त नहीं होता है। वैष्णवों के लिए कृष्णार्चन विहित है–

कृष्णार्चनं नाधिकारो
यतो राधार्चन बिना।
वैष्णवेः सकलै तस्मात्
कर्त्तव्यं राधिकार्चनम्
कृष्ण प्राणाधिका देवी सा
तद्धीनो विभुर्यतः।
राध्नोति सकल कामान्
तस्मात् राधेति प्रकीर्तिता।

राधाकृष्ण के प्रेम को महाभाव कहा गया है। प्रीति की पराकाष्ठा महाभाव है। जिस प्रकार इक्षुरस की प्राप्ति के पश्चात् क्रमशः रस, खाँड, गुड़, चीनी तथा कन्त की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार प्रेम की पराकाष्ठा महाभाव है।
मिथिला के कवियों ने ब्रजमण्डल के कवियों की तरह ही राधा–कृष्ण प्रीति निष्ठा का प्रभूत वर्णन किया है। यहाँ की भाषा मैथिली है परन्तु यहाँ ब्रजी के कवियों का बाहुल्य दृष्टिगत होता है। इसकी अक्षुण्ण परम्परा है। सम्प्रति, डॉ. कृष्णचन्द्र 'मयंक' ने ब्रजी में 'श्यामलगौरमनोहरजोड़ी' की रचना की है। इस कृति में श्रीराम तथा श्रीकृष्ण विषयिणी रचनाएँ हैं।
निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मिथिलांचल में ब्रजभाषा वद्ध रचनाएँ मिलती हैं। उनमें कृष्ण–लीला का चरमोत्कर्ष प्रकट है। इन कवियों ने श्रृंगार तथा भक्ति रसों का आश्रय लेकर, अपनी रचनाधर्मिता के द्वारा अशेषानन्द को सृष्ट किया है।

**संदर्भ–सूची :**

1. वेदान्तसार–27
2. श्री मद्देवती भागवत महापुराण–7–3
3. सां. सू.–17
4. त्रिमात्राशक्त्भोद्भव–17